

आर्या समाज

122

ARYA ARCHIVES

श्री

दकावाशं मनु गगन कथयिष्यामि ॥ • ॥ सिवानन्दमः
नुवृद्ध सासनयकानकाद्वै सगियत्सलको ॥ नन काव
नमदाहानमनुयदं ॥ • ॥ उं महाकाद्वै रुद्र ॥ विर
जस्य ॥ उं ऊं ऊं ऊं रुद्र ॥ वरुण रुद्र ॥ उं महा रुद्र ॥ वरुण रुद्र
यदायका ऊं ऊं ऊं रुद्र ॥ वरुण रुद्र ॥ उं ऊं ऊं ऊं रुद्र ॥

दृष्ट ॥ मरु रुद्र ॥ उं ऊं ऊं क ॥ रुद्र ॥ कि निर मदानादकलाल
विकलाल किं श्री रुद्र ॥ दद ॥ यव ॥ सिद्धिदायकाय स्वाहा ॥ दम
रुद्र ॥ उं उं उं रुद्र ॥ ववाय सं सं सं नू नू नू रुद्र रुद्र रुद्र स्वाहा
॥ द्वादश रुद्र ॥ उं सर्वकर्म कन ॥ सर्ववृद्धनमस्तु न साधय
रुवनग्यः रुद्रि मि कृति नं कवाणि ॥ उं उं मय रुद्र रुद्र रुद्र रुद्र

三

वलयालाल स्वाहि २ गङ्गा २ वलिह २ गुप्त २ सर्वं महा रेव वाय स्वा
हा ॥ वगुदस रङ्गा नानमनु नवलिंदया गृयुतिदिनं सर्वसि
धार्थ ॥ ॐ सांमं नं कं सावय कयया नाय दूवङ्गे १॥ अनेन नका
मनु ॥ ॐ धनवीधन २ कं कं कं अमृकसावकां कुने स्वाहा ॥
यनमनका ॥ ॐ कौं किं कौं मं कं लालविकलाल महाकं काल

3

आग्न्यस्व न सर्वविघ्नविनायकाय स्वाहा ॥ वादमरुदस्य ॥
 श्रीं किं गुरु वलिं रुं रुं मध्यमांसयुष्यभूय न कया नो ले मय
 ना गदवज्जु नाने स गुरु ॐ दं वलि दा दा दा रुं स्वादि र ख र रुं
 ऊरु रुं म दा य रुं आ दा स र ग ऊ य र रुं ऊ य र रुं व रुं य रुं
 रुं रुं रुं स्वाहा ॥ यमिदिनीना गो वलिं दा गयीं मा य ऊ रुं दि क या

मदिनामांसः न कयूर्ध्व च कविंसतिदिवस्यगुणगुणैव कथ
 यिथ्यति ॥ मास्यनासिद्धिददातिः वेवकनयदिद्विगुणत्वं ना
 ति ॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं रुद्र ॥ अनेन मनुवा ऊन ४ ॥ उच्चावित्तमागुन ४
 सर्वयायानियविनैर्यगद्वगिसदाऊफनसर्वसिध्दति ह
 वयातयः सफऊयत्वाव आसाधयत् ॥ ध्रुवं गुरुं र्गऊयत्वा

मप्रस्यमानयति ॥ नरुनवाजायवश्चरुनसर्वदवडाका
 ध्रुवं सानिवर्हः आत्ययनितवनवमीनावाकथाव आमनु
 ॥ ॐ न हो कालं क्रीं क्रीं रुद्र स्थाहा ॥ साधनमनु ॥ ॐ महानन्दस
 ॥ ॐ न हो कालं क्रीं क्रीं रुद्र स्थाहा ॥ साधनमनु ॥ ॐ महानन्दस
 ॥ ॐ न हो कालं क्रीं क्रीं रुद्र स्थाहा ॥ साधनमनु ॥ ॐ महानन्दस
 ॥ ॐ न हो कालं क्रीं क्रीं रुद्र स्थाहा ॥ साधनमनु ॥ ॐ महानन्दस

निर्दंष्ट्री स्वाहा ॥ वन्दे स्वामिनाम ॥ उला ककुलि स्य स्व निय
इन्द्र स्वाहा ॥ कलि स्य स्व नि स्या ॥ उमा मा ह स्व नि इन्द्र ॥
मा ह स्व नि स्य ॥ कालिक लालि श्रीं क्रीं इन्द्र स्वाहा ॥ कोलि ५
स्या ॥ उर्वर य २ इन्द्र ॥ वशी क स्य ॥ उवा मधुः द ह श य व
२० देव लि ग २ इन्द्र स्वाहा ॥ देवा वलि म ॥ उं क्रीं

४४ इन्द्र स्वाहा ॥ उमा द व स्य ॥ उं मा ४ इन्द्र ॥ काय वा क वि रु
विमान मनु ॥ ॥ उं क्रीं इन्द्र ॥ उद्य व द र्म मान य २ इन्द्र
इन्द्र ॥ सर्व मान न स्य ॥ उं क्रीं हा ह म म क स्य उं वा न य इन्द्र
६ ॥ अनन नियु र्ग इन्द्र ॥ यत्ना म्भान र म्भान पुरुषी का क
लो र स्य दान ग व य य म् उ वा न य नि स य धा ॥ उं वा न न मः

नु॥ उं मं ऊं कं स ग रू म न स्या॥ उं ऊं ४ ऊं ह स्मि रू म य ऊं रु द
॥ मुख क ली गु ल न स य ध म नुं य य थ ह न य त ॥ ह स्ती रू
प्री रू न ॥ उं मं २ ह २ ह र्दि ण्ण धा त क रू म न ॥ मां मं न ह न य
न ॥ अ ल रू म न ॥ उं हा म ४ स र्व य स नी रू म य मा ह य ऊं
रू द ॥ व्या धु व र्मा नि स य वा नी य य थ ह न्या म हि वा ध ४

ह स्मि रू म न व्या ध रू ल का ४ रू म नं जा नि ध र्वे ण मू क स्य ऊं
रू द ॥ न व मू ल रू म न स्या॥ उं ऊं मं वं वा म ४ ह ४ श्री ऊं रु द ॥
ख ञ्ज दि रू म न स्या॥ उं म ह न न द ऊं रु द ॥ स य ध म धू नि रा वः
यि त्वा स र्य ह न य त ॥ स र्य रू म न ॥ उं मा हि न रू नि रू ह २
ह २ रू म नं शू क का व स्या॥ उं घं ऊं मी ॥ मा ह न स्या॥ उं ह ४ क

करुणवलिनिमूयसाधयमहाकालवृद्धानां सर्वसाधुयसाध
यगः महाहरे नवं चकसुखं कसुखं शैलवादनं कहीकयालक
नीविधीः अष्टनागविराशिनी विकटदन्तं चकदन्तं डडकसं ४
रुयानकादिरुयानकं घादभवर्षाकृतिडडलिगं नग्नं
था सर्वगडं का नवीजं नस्मिमयं व अष्टरावनामकुं व

सर्वसनवाधिनस्य निविनियगवसु टिकधमूर्धनं वम
नं ॥ • ॥ डं सखा ४ हरे नवाय स्वाहा ॥ ॐ नो नाम न ॥ डं
वड हरे नवाय डं २ रु २ स्वाहा ॥ डं मे ४ डं त्वत्स्वादिस्वा
दिमात्रनं सर्वगवं मेहा हरे नवेय यष्टु स्वाहा ॥ • ॥
अनेन हृदयस्य ॥ • ॥ माहाकाल सर्वग ४ डं क

श्री

लालविकलालविकटस्वनमहाकंकालकिंघ्रीवंवंसंईई
ईमहानन्दस्वनस्यवावासाहा॥ ० ॥ अथकृष्णालोक
धयिष्यामि॥ यनाविष्णुयदसमावन्नत॥ यस्ममासुरवैग ८
था॥ पुथमनीलईकालीविर्वित्यनायेहायस्वनकावयः
न॥ वायदभनादिकंवहृदिईविर्वित्यकहिउतत्यनिग

वहृईकानाधिशिर्गं॥ उगलसकलयनिर्नम्यात्मानंकृष्णया
लद्विष्टकृष्णकपालहृस्तेष्टालिदयदस्मिर्नैककृला
वाहनंईई॥ कोलनाददवीकईईनीलवर्णगीनिलो
वर्नयित्ताईकसंवायवममावर्नजिनवसनैवृधिवयिव
कंदयाडागिन्यासमावसितोलावयगु॥ ६३ ॥

